संपादकीय

प्रिय पाठको! हम सभी देश के वैज्ञानिक जगत के महान प्रयासों पर गौरवान्वित महसूस करते हैं कि हमारे देश का चंद्रयान-3, 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा की सतह पर उतरा। देश की इस महान उपलब्धि के प्रति विद्यार्थियों की जिज्ञासा एवं रुचि उत्पन्न करने के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा चंद्रयान उत्सव मनाया गया। इसके अंतर्गत चंद्रयान-3 की सफलता से जुड़े विविध पहलुओं पर 10 विशिष्ट सामग्री विकसित की गई। इसी कड़ी में 'अपना चंद्रयान' वेब पोर्टल 17 अक्तूबर 2023 को लॉन्च किया गया। इसमें मिशन चंद्रयान-3 पर स्कूली विद्यार्थियों के लिए गतिविधि आधारित अंतर्क्रियात्मक सामग्री, जैसे— क्विज, पहेलियाँ, कहानियाँ आदि उपलब्ध हैं। इस अंक की शुरुआत भी बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान से जुड़े शोध-पत्र के साथ की गई है जो विभिन्न शैक्षिक सरोकारों को प्रस्तुत करता है।

विद्यालय शिक्षा के केंद्र होते हैं। जहाँ पर बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर बच्चों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे उनका शैक्षिक आधार मज़बूत हो सके। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान हेतु बुनियादी ढाँचे एवं सामर्थ्य की आवश्यकता' पत्रिका में दिया गया है। इस शोध-पत्र में बच्चों को पूर्व-प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर तक बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान में निपुण होने के लिए बुनियादी ढाँचे का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

बच्चे के सीखने की प्रक्रिया परिवार से ही आरंभ हो जाती है। वह अपने परिवार के सदस्यों से भाषा कौशल एवं बुनियादी अनुभव प्राप्त करता है। यही अनुभव उनके भावी जीवन का आधार बनते हैं। इसी पर आधारित लेख 'बाल मन पर अनुभव-आधारित अधिगम का प्रभाव — एक साहित्यिक प्रसंग' पत्रिका में प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में हिंदी साहित्य की विधाओं, जैसे— कहानी एवं उपन्यास के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने बड़ों का अनुकरण कर सीखते हैं। यहीं से उनमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टि विकसित होती है।

एक आदर्श नागरिक बनने की मूल आवश्यकता उसका सर्वांगीण विकास है। इसमें मूल्य एवं संस्कार उसके चरित्र का निर्माण करते हैं। जिन्हें भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत प्राचीन समय से अपने में समाहित किए हुए है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी प्रासंगिक है। इसी पर आधारित लेख 'भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता एवं पुनर्स्थापना' को पत्रिका में शामिल किया गया है। इस लेख में योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक कल्याण की शिक्षा के साथ-साथ अन्य विषयों से संबंधित शिक्षा पर भी प्रकाश डाला गया है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन होता रहा है। इसी परिवर्तन से भारतीय समाज का शैक्षिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास हो रहा है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'गाँव में प्राथमिक शिक्षा की पारिस्थितिकी— प्रवृत्तियाँ एवं बदलाव' प्रस्तुत किया गया है। इसमें ग्रामीणों के दृष्टिकोणों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

शिक्षक वह है, जो बच्चे के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है, वही बच्चा आगे चलकर समाज के विकास में योगदान देता है। इसलिए शिक्षक का दायित्व है कि वह सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा प्रदान करें एवं उनकी अधिगम संबंधी समस्याओं का सार्थक निवारण करें। अतः शिक्षक को अपनी शिक्षण पद्धतियों एवं विधियों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए तथा समय-समय पर अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को जाँचना चाहिए। इस हेतु वह कक्षागत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर अपने अनुभवों को लिपिबद्ध कर उस पर चिंतन-मनन कर अपनी कमियों को सुधार सकता है। इसी पर आधारित लेख 'मननशील जर्नल लेखन— दक्षता आधारित शिक्षक तैयार करने का एक उपकरण' प्रस्तुत किया गया है।

आज ऑनलाइन शिक्षा की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, लेकिन विद्यार्थी ऑनलाइन अधिगम के अतिरिक्त सोशल मीडिया का उपयोग मनोरंजन के लिए अधिक करने लगे हैं। विशेषकर किशोर सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करते हैं। इससे उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे— अनिद्रा, थकान, चिड़चिड़ापन आदि। इन्हीं सरोकारों पर आधारित शोध-पत्र 'किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य एवं सोशल मीडिया' प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का सार्थक होना तभी माना जाता है, जब विद्यार्थी निर्धारित ज्ञान को सीख पाएँ। इसमें गणित विषय कुछ विद्यार्थियों को कठिन लगता है। क्योंकि उन्हें गणित की संख्यात्मक संक्रियाओं को समझने में कठिनाई होती है। इसलिए गणित को सरल भाषा में सामान्यीकृत करके पढ़ाना चाहिए। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'पूर्णांकों को हमने कैसे समझा?' प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाओं एवं नीतियों का निर्माण किया गया है, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार होता रहे। इसी विचार पर आधारित लेख 'विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने की एक सार्थक पहल— सोशल ऑडिट' पत्रिका में दिया गया है। इसमें समग्र शिक्षा योजना के सुचारू रूप से क्रियान्वयन तथा अपेक्षित अधिगम प्रतिफल व विद्यालय प्रतिफल प्राप्त करने के लिए सोशल ऑडिट के महत्व एवं उसकी प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया है।

व्यक्ति समाज में रहकर अपनी जीवन संबंधी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है। इसलिए उसे अपने विकास के लिए शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर पर समायोजन करना आवश्यक है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन' प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-पत्र में शासकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

प्रौढ़ शिक्षा और जीवनपर्यंत सीखना, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की एक महत्वपूर्ण अनुशंसा है। इस अनुशंसा को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' जिसे 'उल्लास' भी कहते हैं, के नाम से क्रियान्वित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बुनियादी साक्षरता संबंधी सीखने के प्रतिफल एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रवेशिकाएँ विकसित की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं पर आधारित शोधपत्र "बुनियादी साक्षरता संबंधी सीखने के प्रतिफल— 'उल्लास' प्रवेशिका का समीक्षात्मक अध्ययन" प्रस्तुत किया गया है।

बच्चे बहुत कोमल होते हैं। जीवन के प्रति उनकी जिज्ञासा, इच्छाएँ, अनुभव एवं कल्पना उनको सृजनात्मक कार्य करने के लिए उकसाती रहती हैं। इसलिए उनकी इच्छाओं की पूर्ति के लिए शिक्षक को भी उस स्तर का बनना पड़ता है। इसी पर आधारित पुस्तक समीक्षा *सार्थक भूमिका की तलाश* प्रस्तुत की गई है। इसमें बच्चों को केंद्र में रखते हुए शिक्षक की सार्थक भूमिका पर चर्चा की गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा, साथ ही हम आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध-पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आवरण 3 पर दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति